

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **JUNE 30, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवादी राजनीति के विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ब्रिटिश सरकार द्वारा शुरू किए गए कुछ संवैधानिक सुधारों का उद्देश्य एक साथ सीमित राजनीतिक भागीदारी और शाही नियंत्रण का संरक्षण दोनों था।
2. संवैधानिक सुधारों की राष्ट्रवादी आलोचना केवल विधायी निकायों में भारतीय प्रतिनिधित्व की अनुपस्थिति पर आधारित थी।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) न तो एक और न ही दो
- (d) 1 और 2 दोनों

उत्तर: (a) केवल एक

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** भारत में कई ब्रिटिश संवैधानिक सुधारों ने (जिनमें बीसवीं सदी की शुरुआत में पेश किए गए सुधार भी शामिल थे) राजनीतिक भागीदारी के सीमित अवसर पैदा करने का प्रयास किया, जबकि यह सुनिश्चित किया कि वास्तविक अधिकार औपनिवेशिक प्रशासन के पास ही रहे। इस दोहरी रणनीति का उद्देश्य मूल नियंत्रण को छोड़े बिना बढ़ती राष्ट्रवादी मांगों को शांत करना था।
- **कथन 2 गलत है।** राष्ट्रवादी आलोचना केवल भारतीय प्रतिनिधित्व की कमी के बारे में नहीं थी। भारतीय नेताओं ने सीमित मताधिकार, विधानसभाओं की प्रतिबंधित शक्तियों, कार्यपालिका के प्रभुत्व, सांप्रदायिक निर्वाचक मंडलों और औपनिवेशिक शासन की मौलिक रूप से गैर-प्रतिनिधित्ववादी प्रकृति पर आपत्ति जताई थी। इसलिए, आलोचना केवल संख्यात्मक प्रतिनिधित्व से कहीं आगे तक विस्तृत थी।

अतः, केवल एक कथन सही है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा एक सबसे अच्छी व्याख्या करता है कि क्यों नष्ट हो चुके पारिस्थितिक तंत्र का पारिस्थितिक जीर्णोद्धार (Ecological restoration) हमेशा मूल जैव विविधता संरचना को पुनः निर्मित नहीं कर पाता है?

- (a) पारिस्थितिक अनुक्रमण (Ecological succession) समय के साथ हमेशा समान प्रजातियों की संरचना को बहाल करता है
- (b) प्रजातियों की परस्पर क्रिया, मिट्टी की स्थिति और मानवजनित व्यवधान पारिस्थितिक तंत्र के प्रक्षेपवक्र (trajectories) को स्थायी रूप से बदल सकते हैं
- (c) बहाली पारिस्थितिकी (Restoration ecology) मुख्य रूप से व्यावसायिक वृक्षारोपण के मूल्य को अधिकतम करने पर केंद्रित है
- (d) पारिस्थितिक तंत्र की रिकवरी (पुनर्प्राप्ति) के पैटर्न को निर्धारित करने में जलवायु परिवर्तनशीलता की कोई भूमिका नहीं है

उत्तर: (b) प्रजातियों की परस्पर क्रिया, मिट्टी की स्थिति और मानवजनित व्यवधान पारिस्थितिक तंत्र के प्रक्षेपवक्र को स्थायी रूप से बदल सकते हैं

विस्तृत व्याख्या:

पारिस्थितिक जीर्णोद्धार पारिस्थितिकी तंत्र के कार्यों और जैव विविधता को बहाल करने का प्रयास करता है, लेकिन बहाल पारिस्थितिक तंत्र आवश्यक रूप से सटीक ऐतिहासिक पारिस्थितिक स्थिति की नकल नहीं करते हैं। मिट्टी का क्षरण, आक्रामक प्रजातियाँ (invasive species), परिवर्तित जल विज्ञान (hydrology), आवास विखंडन (habitat fragmentation) और निरंतर मानवीय व्यवधान पारिस्थितिक अनुक्रमण (succession) के मार्गों को बदल सकते हैं।

- विकल्प (a) गलत है क्योंकि अनुक्रमण समान जैव विविधता की बहाली की गारंटी नहीं देता है।
- विकल्प (c) गलत है क्योंकि बहाली पारिस्थितिकी मुख्य रूप से व्यावसायिक वृक्षारोपण के लक्ष्यों के बजाय पारिस्थितिक सुधार पर जोर देती है।
- विकल्प (d) गलत है क्योंकि जलवायु परिवर्तनशीलता पुनर्जनन और प्रजातियों के वितरण को दृढ़ता से प्रभावित करती है।

इसलिए, विकल्प (b) सबसे उपयुक्त उत्तर है।

प्रश्न 3. समष्टि आर्थिक (मैक्रोइकॉनॉमिक) प्रबंधन और सार्वजनिक वित्त के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक निरंतर राजस्व घाटा (revenue deficit) यह दर्शाता है कि सरकार अपने वर्तमान उपभोग व्यय के एक हिस्से को पूरा करने के लिए भी ऋण ले रही है।
2. राजकोषीय घाटा (fiscal deficit) और सार्वजनिक ऋण (public debt) समान अवधारणाएं हैं और इन्हें एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जा सकता है।

3. आर्थिक मंदी के दौरान विस्तारवादी राजकोषीय नीति (Expansionary fiscal policy) में सार्वजनिक व्यय में वृद्धि या कराधान में कमी शामिल हो सकती है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** राजस्व घाटा तब होता है जब राजस्व व्यय, राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो जाता है। यह बताता है कि उधार का उपयोग केवल पूंजी निर्माण के लिए करने के बजाय वर्तमान व्यय के लिए भी किया जा सकता है।
- **कथन 2 गलत है।** राजकोषीय घाटा और सार्वजनिक ऋण संबंधित तो हैं लेकिन अलग-अलग अवधारणाएं हैं। राजकोषीय घाटा वार्षिक ऋण आवश्यकताओं को संदर्भित करता है, जबकि सार्वजनिक ऋण समय के साथ संचित देनदारियों (accumulated liabilities) को संदर्भित करता है।
- **कथन 3 सही है।** विस्तारवादी राजकोषीय नीति का उद्देश्य उच्च सरकारी खर्च, कर कटौती, या दोनों के माध्यम से आर्थिक मंदी के दौरान कुल मांग (aggregate demand) को प्रोत्साहित करना है।

इस प्रकार, कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है। अतः, केवल दो कथन सही हैं।

प्रश्न 4. संवैधानिक ढांचे और भारतीय लोकतंत्र की कार्यप्रणाली के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रत्येक संवैधानिक संशोधन के लिए स्वचालित रूप से कम से कम आधे राज्य विधानमंडलों द्वारा अनुसमर्थन (ratification) की आवश्यकता होती है।
2. न्यायिक समीक्षा (Judicial review) को संवैधानिक सर्वोच्चता की रक्षा करने वाली संवैधानिक योजना का हिस्सा माना जाता है।
3. संसद संविधान के कई प्रावधानों में संशोधन कर सकती है, लेकिन ऐसी शक्ति न्यायिक रूप से विकसित सीमाओं के अधीन है।
4. संवैधानिक व्याख्या में मौलिक अधिकार और नीति निर्देशक सिद्धांत हमेशा परस्पर अनन्य (mutually exclusive) होते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है।** संघीय प्रावधानों को प्रभावित करने वाले केवल कुछ संवैधानिक संशोधनों के लिए ही कम से कम आधे राज्य विधानमंडलों द्वारा अनुसमर्थन की आवश्यकता होती है। अधिकांश संशोधनों को ऐसे अनुसमर्थन की आवश्यकता नहीं होती है।
- **कथन 2 सही है।** न्यायिक समीक्षा अदालतों को संवैधानिक वैधता के लिए विधायी और कार्यकारी कार्यों की जांच करने में सक्षम बनाती है और संवैधानिक सर्वोच्चता बनाए रखने के लिए केंद्रीय है।
- **कथन 3 सही है।** हालांकि संसद के पास व्यापक संशोधन शक्तियां हैं, लेकिन न्यायिक सिद्धांतों ने इस पर सीमाएं लगाई हैं, विशेष रूप से 'मूल संरचना' (Basic Structure) के सिद्धांत के माध्यम से।
- **कथन 4 गलत है।** मौलिक अधिकार और नीति निर्देशक सिद्धांत स्वाभाविक रूप से अंतर्विरोधी नहीं हैं। संवैधानिक व्याख्या तेजी से उनके बीच सद्भाव और संतुलन की तलाश करती है।

इसलिए, केवल कथन 2 और 3 सही हैं। अतः, केवल दो कथन सही हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

अभिकथन (A): उच्च वार्षिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों को अभी भी मौसमी जल तनाव (water stress) का अनुभव हो सकता है। **कारण I:** वर्षा का स्थानिक (spatial) और कालिक (temporal) संकेंद्रीकरण उच्च कुल वर्षा के बावजूद प्रभावी पानी की उपलब्धता को सीमित कर सकता है। **कारण II:** सतही अपवाह (surface runoff), अपर्याप्त भंडारण बुनियादी ढांचा और भूजल का अत्यधिक दोहन स्थानीय पानी की कमी को तीव्र कर सकता है।

- (a) कारण I और कारण II दोनों सही हैं और दोनों अभिकथन (A) की व्याख्या करते हैं
- (b) कारण I और कारण II दोनों सही हैं, लेकिन उनमें से केवल एक ही अभिकथन (A) की व्याख्या करता है
- (c) केवल एक कारण सही है
- (d) न तो कारण I और न ही कारण II सही है

उत्तर: (a) कारण I और कारण II दोनों सही हैं और दोनों अभिकथन (A) की व्याख्या करते हैं

विस्तृत व्याख्या:

- **अभिकथन (A) सही है।** उच्च वार्षिक वर्षा स्वचालित रूप से साल भर पानी की उपलब्धता की गारंटी नहीं देती है। पर्याप्त वर्षा प्राप्त करने वाले कई क्षेत्रों को अभी भी मौसमी कमी का सामना करना पड़ता है।
- **कारण I सही है** और सीधे अभिकथन की व्याख्या करता है। वर्षा कुछ महीनों में केंद्रित हो सकती है, जिसके परिणामस्वरूप असमान कालिक वितरण होता है और शुष्क अवधियों के दौरान उपलब्धता कम हो जाती है।
- **कारण II भी सही है** और स्वतंत्र रूप से अभिकथन की व्याख्या करता है। अत्यधिक अपवाह, खराब भंडारण क्षमता, कमजोर जल प्रबंधन प्रणाली और भूजल की कमी के कारण उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में भी जल तनाव हो सकता है।

चूंकि दोनों कारण सही हैं और दोनों अभिकथन की व्याख्या करते हैं, इसलिए विकल्प (a) सही उत्तर है।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. देश रणनीतिक अवसर कार्यक्रम (COSOP) 2026-2033 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. COSOP ग्रामीण परिवर्तन और लचीलेपन (resilience) के लिए भारत और कृषि विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय कोष (IFAD) के बीच एक रणनीतिक साझेदारी ढांचा है।
2. यह कार्यक्रम मुख्य रूप से संप्रभु ऋण पुनर्गठन (sovereign debt restructuring) और शहरी बुनियादी ढांचा वित्तपोषण पर केंद्रित है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) न तो एक और न ही दो (d) 1 और 2 दोनों

उत्तर: (a) केवल एक

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** COSOP भारत और IFAD (International Fund for Agricultural Development) के बीच एक आठ-वर्षीय रणनीतिक ढांचा है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण समृद्धि, आजीविका विविधीकरण, जलवायु लचीलापन और समावेशी कृषि विकास को बढ़ावा देना है।
- **कथन 2 गलत है।** COSOP कोई शहरी बुनियादी ढांचा या संप्रभु ऋण पुनर्गठन कार्यक्रम नहीं है। इसका जोर ग्रामीण विकास, छोटे किसानों की कृषि, संस्थागत भागीदारी और जलवायु-अनुकूल आजीविका पर है।

अतः, केवल एक कथन सही है।

प्रश्न 2. लीड्स (LEADS) 2025 रिपोर्ट मुख्य रूप से किससे संबंधित है?

(a) लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति-श्रृंखला (supply-chain) दक्षता में राज्यों के प्रदर्शन को मापना (b) तटीय क्षेत्रों की पारिस्थितिक वहन क्षमता (ecological carrying capacity) का आकलन करना (c) डिजिटल गवर्नेंस संकेतकों पर भारतीय शहरों की रैंकिंग करना (d) नवीकरणीय ऊर्जा संक्रमण लक्ष्यों पर राज्यों का मूल्यांकन करना

उत्तर: (a) लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति-श्रृंखला दक्षता में राज्यों के प्रदर्शन को मापना

विस्तृत व्याख्या:

LEADS का पूर्ण रूप 'लॉजिस्टिक्स ईज अक्रॉस डिफरेंट स्टेट्स' (Logistics Ease Across Different States) है। यह रिपोर्ट बुनियादी ढांचे, रसद (लॉजिस्टिक्स) सेवाओं, नियामक वातावरण, वेयरहाउसिंग (भंडारण), मल्टीमॉडल परिवहन और आपूर्ति-श्रृंखला सुविधा से संबंधित संकेतकों का उपयोग करके राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में लॉजिस्टिक्स प्रदर्शन का मूल्यांकन करती है।

- विकल्प (b) पर्यावरण मूल्यांकन से संबंधित है।
- विकल्प (c) डिजिटल गवर्नेंस सूचकांकों को संदर्भित करता है।
- विकल्प (d) ऊर्जा संक्रमण आकलनों से संबंधित है।

इसलिए, विकल्प (a) सही है।

प्रश्न 3. भूतल कोयला/लिग्नाइट गैसीकरण परियोजनाओं को बढ़ावा देने की योजना (Scheme for Promotion of Surface Coal/Lignite Gasification Projects) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह योजना गैसीकरण तकनीक (gasification technology) के माध्यम से कोयले और लिग्नाइट को मूल्यवर्धित उत्पादों (value-added products) में बदलने को बढ़ावा देती है।
2. यह योजना कोयला गैसीकरण परियोजनाओं में निजी क्षेत्र की भागीदारी को पूरी तरह से प्रतिबंधित करती है।
3. कोयला गैसीकरण कुछ आयातित फीडस्टॉक और रसायनों पर निर्भरता को कम कर सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- कथन 1 सही है। यह योजना सिंथेसिस गैस (syngas) और डाउनस्ट्रीम औद्योगिक उत्पादों के लिए कोयला संसाधनों का उपयोग करके एक स्वच्छ और मूल्य-वर्धन मार्ग के रूप में भूतल कोयला/लिग्नाइट गैसीकरण को बढ़ावा देती है।
- कथन 2 गलत है। यह योजना निजी भागीदारी को प्रतिबंधित नहीं करती है। इसके बजाय, यह विभिन्न कार्यान्वयन तंत्रों के माध्यम से निवेश और तकनीकी भागीदारी को प्रोत्साहित करती है।
- कथन 3 सही है। कोयला गैसीकरण से सिनगैस (syngas) और रासायनिक फीडस्टॉक का उत्पादन किया जा सकता है जो मेथनॉल, अमोनिया और संबंधित औद्योगिक इनपुट जैसे कुछ आयातों पर निर्भरता को कम कर सकता है।

इसलिए, कथन 1 और 3 सही हैं। अतः, केवल दो कथन सही हैं।

प्रश्न 4. हिंद महासागर संवाद (Indian Ocean Dialogue - IOD) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह हिंद महासागर क्षेत्रीय सहयोग से जुड़ा एक नीतिगत संवाद मंच (policy dialogue platform) के रूप में कार्य करता है।
2. यह संवाद विशेष रूप से हिंद महासागर के तटीय राज्यों के बीच नौसेना सैन्य अभ्यासों से संबंधित है।
3. समुद्री सुरक्षा, नीली अर्थव्यवस्था (blue economy), आपदा लचीलापन और क्षेत्रीय कनेक्टिविटी इसके विचार-विमर्श के एजेंडे का हिस्सा हो सकते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** हिंद महासागर संवाद एक नीतिगत और रणनीतिक संवाद मंच के रूप में कार्य करता है जिसमें हिंद महासागर क्षेत्र से संबंधित हितधारक शामिल होते हैं।
- **कथन 2 गलत है।** IOD केवल एक सैन्य या नौसैनिक अभ्यास व्यवस्था नहीं है। इसका दायरा व्यापक है और यह बहुआयामी क्षेत्रीय चिंताओं को संबोधित करता है।
- **कथन 3 सही है।** इसके विचार-विमर्श में आमतौर पर समुद्री शासन, नीली अर्थव्यवस्था, सुरक्षा सहयोग, कनेक्टिविटी, जलवायु लचीलापन और आपदा प्रतिक्रिया शामिल होते हैं।

अतः, केवल दो कथन सही हैं।

प्रश्न 5. निकोबार क्षेत्र में प्रस्तावित वन्यजीव अभयारण्यों के प्रति निकोबारी समुदाय के विरोध के संदर्भ में,

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह विरोध आंशिक रूप से परामर्श प्रक्रियाओं और पारंपरिक सामुदायिक अधिकारों व आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर उपजी चिंताओं के कारण सामने आया।
2. प्रस्तावित अभयारण्य से जुड़े विवाद पर 'ग्रेट निकोबार विकास पहलों' के व्यापक संदर्भ में चर्चा की गई है।
3. भारतीय पर्यावरण शासन के तहत, वन्यजीव अभयारण्यों की घोषणा बिना किसी प्रक्रियात्मक जुड़ाव के सभी पारंपरिक और सामुदायिक चिंताओं को स्वचालित रूप से समाप्त कर देती है।
4. यह विवाद संरक्षण के उद्देश्यों और निर्णय लेने में स्वदेशी (स्थानीय) भागीदारी के बीच एक व्यापक टकराव को दर्शाता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (c) केवल तीन

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** सामुदायिक चिंताएं परामर्श प्रक्रियाओं और पारंपरिक उपयोग व स्थानीय आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों के इर्द-गिर्द केंद्रित थीं।
- **कथन 2 सही है।** अभयारण्य के मुद्दे को ग्रेट निकोबार के आसपास की व्यापक विकासात्मक और पर्यावरणीय चर्चाओं के संबंध में देखा गया है।
- **कथन 3 गलत है।** वन्यजीव अभयारण्य की घोषणा में कानूनी और प्रक्रियात्मक प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। यह स्वचालित रूप से सभी चिंताओं को समाप्त नहीं करता है और न ही परामर्श से जुड़ी बहसों को खारिज करता है।
- **कथन 4 सही है।** यह मुद्दा एक व्यापक नीतिगत चुनौती को दर्शाता है जिसमें जैव विविधता संरक्षण, रणनीतिक विकास और स्वदेशी भागीदारी शामिल है।

इस प्रकार, तीन कथन सही हैं।

प्रश्न 6. उज्बेकिस्तान के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. उज्बेकिस्तान एक दोहरा भू-आबद्ध (doubly landlocked) देश है।
2. यह कजाकिस्तान और अफगानिस्तान के साथ सीमाएं साझा करता है।
3. इसकी कैस्पियन सागर तक सीधी पहुंच है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

विस्तृत व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** उज्बेकिस्तान दुनिया के उन चुनिंदा देशों में से एक है जो दोहरे भू-आबद्ध (doubly landlocked) हैं, जिसका अर्थ है कि महासागर तक पहुँचने के लिए किसी भी व्यक्ति को कम से कम दो अन्य देशों से होकर गुजरना होगा।
- **कथन 2 सही है।** उज्बेकिस्तान कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और अफगानिस्तान के साथ सीमाएं साझा करता है।
- **कथन 3 गलत है।** उज्बेकिस्तान की कैस्पियन सागर तक सीधी पहुंच नहीं है।

अतः, केवल दो कथन सही हैं।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

सामान्य अध्ययन-1 (इतिहास)

प्रश्न 1. "1857 का विद्रोह केवल एक सैनिक विद्रोह नहीं था, बल्कि यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक असंतोष को दर्शाता था।" समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

प्रस्तावना (Introduction)

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ शुरुआती और सबसे व्यापक विद्रोहों में से एक के रूप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह 10 मई 1857 को मेरठ में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना के भारतीय सिपाहियों के बीच एक विद्रोह के रूप में शुरू हुआ और तेजी से दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झांसी और कई अन्य क्षेत्रों में फैल गया। इतिहासकारों ने इस बात पर बहस की है कि क्या इसे केवल एक सैनिक विद्रोह के रूप में देखा जाना चाहिए या एक व्यापक उपनिवेशवाद-विरोधी आंदोलन के रूप में। एक समालोचनात्मक परीक्षण से पता चलता है कि यद्यपि विद्रोह की शुरुआत सैनिकों के बीच हुई थी, लेकिन जल्द ही इसमें भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की शिकायतें और असंतोष शामिल हो गए।

मुख्य भाग (Body)

- **तात्कालिक कारण:** विद्रोह का तात्कालिक कारण एनफील्ड राइफल की शुरुआत थी जिसके कारतूसों में कथित तौर पर गाय और सूअर की चर्बी का इस्तेमाल किया गया था। चूंकि सैनिकों को उपयोग से पहले इन कारतूसों को दांतों से काटना पड़ता था, इसलिए हिंदू और मुस्लिम सिपाहियों ने इसे अपने धार्मिक विश्वासों पर हमला माना। हालांकि, इस विद्रोह की व्याख्या केवल इसी एक घटना के माध्यम से नहीं की जा सकती।
- **राजनीतिक शिकायतें:** राजनीतिक शिकायतों ने असंतोष पैदा करने में बड़ी भूमिका निभाई। अंग्रेजों की विलय नीति, विशेष रूप से लॉर्ड डलहौजी के तहत शुरू किए गए 'व्यपगत के सिद्धांत' (Doctrine of Lapse) के परिणामस्वरूप सतारा, झांसी और नागपुर जैसे राज्यों का विलय कर लिया गया। 1856 में अवध के विलय ने तालुकदारों, रईसों और उन सैनिकों के बीच व्यापक गुस्सा पैदा किया जो पहले स्थानीय शासक के अधीन सेवा कर चुके थे। पारंपरिक अभिजात वर्ग को अपनी स्थिति और अधिकार खोने का डर था।
- **आर्थिक कारक:** आर्थिक कारकों ने भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया। अत्यधिक भू-राजस्व मांगों ने किसानों और जमींदारों को बोझ तले दबा दिया। ब्रिटिश निर्मित आयातों के कारण पारंपरिक हस्तशिल्प के पतन से कारीगरों को भारी नुकसान हुआ। साहूकार और राजस्व अधिकारी अक्सर ग्रामीण आबादी का शोषण करते थे, जिससे व्यापक असंतोष पैदा हुआ। यही कारण हैं कि कई क्षेत्रों में किसानों और ग्रामीण समुदायों ने विद्रोह का पुरजोर समर्थन किया।
- **सैन्य क्षेत्र से परे भागीदारी:** इस विद्रोह में सेना से परे भी व्यापक भागीदारी देखी गई। बहादुर शाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तांत्या टोपे और कुंवर सिंह जैसे नेता प्रतिरोध के प्रतीक बनकर उभरे। कई क्षेत्रों में किसान, बेदखल जमींदार और स्थानीय नेता इस विद्रोह में शामिल हुए। यह व्यापक सामाजिक भागीदारी दर्शाती है कि यह विद्रोह एक साधारण सैनिक विद्रोह से कहीं अधिक था।
- **विद्रोह की सीमाएँ:** फिर भी, इस विद्रोह की कुछ गंभीर सीमाएँ थीं। इसमें एक केंद्रीकृत नेतृत्व, साझा विचारधारा और राष्ट्रव्यापी समन्वय की कमी थी। दक्षिणी और पूर्वी भारत काफी हद तक इससे अप्रभावित रहे, जबकि कई रियासतों और समुदायों ने अंग्रेजों का ही समर्थन किया। इसलिए, इसकी तुलना बाद के संगठित राष्ट्रवादी आंदोलनों से नहीं की जा सकती।

निष्कर्ष (Conclusion)

1857 का विद्रोह न तो केवल एक सैनिक विद्रोह था और न ही पूरी तरह से विकसित राष्ट्रीय आंदोलन। यह औपनिवेशिक शासन के खिलाफ सैन्य विद्रोह और व्यापक सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक असंतोष का एक अनूठा संयोजन था। हालांकि यह खंडित और क्षेत्रीय रूप से सीमित था, लेकिन इसने भारत में भविष्य के उपनिवेशवाद-विरोधी राष्ट्रवाद के लिए मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक नींव रखी।

सामान्य अध्ययन-2 (राजव्यवस्था / राजनीति)

प्रश्न 2. भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने में क्षेत्रीय आकांक्षाओं के महत्व की चर्चा कीजिए।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत एक अत्यधिक विविधतापूर्ण देश है जो भाषाई, सांस्कृतिक, जातीय और क्षेत्रीय बहुलता से सुसज्जित है। ऐसी विविधता स्वाभाविक रूप से क्षेत्रीय आकांक्षाओं को जन्म देती है, जिसमें पहचान, स्वायत्तता, विकास या अलग राज्य की मांग शामिल हो सकती है। स्वतंत्रता के बाद से, भारत ने कई क्षेत्रीय आंदोलनों को देखा है। हालांकि इन आकांक्षाओं को कभी-कभी राष्ट्रीय एकता के लिए खतरे के रूप में देखा जाता है, लेकिन भारत में लोकतांत्रिक अनुभव से पता चलता है कि क्षेत्रीय मांगों के समायोजन ने लोकतंत्र को कमजोर करने के बजाय अक्सर मजबूत ही किया है।

मुख्य भाग (Body)

- **उद्भव के कारण:** क्षेत्रीय आकांक्षाएं भाषाई पहचान, असमान आर्थिक विकास, सांस्कृतिक विशिष्टता और केंद्रीय अधिकारियों द्वारा कथित उपेक्षा सहित कई कारणों से उभरीं। स्वतंत्रता के बाद राज्यों का भाषाई पुनर्गठन इसका एक प्रमुख उदाहरण है। 1953 में आंध्र प्रदेश का गठन और उसके बाद का राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 लोकप्रिय मांगों के प्रति लोकतांत्रिक संवेदनशीलता को दर्शाता है।
- **राजनीतिक भागीदारी का गहरा होना:** क्षेत्रीय आकांक्षाओं ने राजनीतिक भागीदारी को गहरा करके लोकतंत्र को मजबूत किया। क्षेत्रीय दल स्थानीय चिंताओं और हाशिए पर मौजूद आवाजों का प्रतिनिधित्व करने के महत्वपूर्ण साधन बन गए। डीएमके (DMK), शिवसेना, टीडीपी (TDP) और अन्य दलों ने क्षेत्रीय मुद्दों को राष्ट्रीय विमर्श में लाया और भारतीय लोकतंत्र के प्रतिनिधि चरित्र का विस्तार किया। चुनावी प्रतिस्पर्धा और गठबंधन की राजनीति के माध्यम से, क्षेत्रीय चिंताओं को शासन में एकीकृत किया गया।
- **संघवाद (Federalism) को बढ़ावा:** क्षेत्रीय आकांक्षाओं का एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान संघवाद को बढ़ावा देने में निहित है। भारत की संघीय प्रणाली संवैधानिक तंत्रों के माध्यम से विविधता के समायोजन की अनुमति देती है। उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना जैसे अलग राज्यों की मांगों को हिंसक दमन के बजाय संवैधानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से संबोधित किया गया। इस लचीलेपन ने लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता के विश्वास को मजबूत किया।
- **विकासात्मक असंतुलन को उजागर करना:** क्षेत्रीय आंदोलनों ने विकासात्मक असंतुलन को भी रेखांकित किया है। संसाधनों के असमान वितरण और आर्थिक अवसरों की कमी के कारण कई मांगें उठीं। रोजगार, बुनियादी ढांचे और क्षेत्रीय उपेक्षा से जुड़े मुद्दों को उठाकर, ऐसे आंदोलनों ने सरकारों को अधिक संतुलित विकास नीतियां अपनाने के लिए मजबूर किया।
- **संभावित चुनौतियाँ:** हालांकि, क्षेत्रीय आकांक्षाएं तब चुनौतियां पैदा कर सकती हैं जब वे अलगाववादी या हिंसक रूप ले लेती हैं। पंजाब और उत्तर-पूर्व के कुछ हिस्सों में उग्रवाद, साथ ही जम्मू-कश्मीर में तनाव ने अनसुलझी शिकायतों से जुड़े जोखिमों को प्रदर्शित किया। इसके बावजूद, भारतीय राज्य ने ऐसी चिंताओं को दूर करने के लिए मुख्य रूप से संवाद, संघीय व्यवस्था और लोकतांत्रिक भागीदारी पर भरोसा किया।

निष्कर्ष (Conclusion)

क्षेत्रीय आकांक्षाएं स्वभाव से राष्ट्र-विरोधी नहीं होती हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में, वे पहचान और विकास संबंधी चिंताओं की लोकतांत्रिक अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। जब संवैधानिक और लोकतांत्रिक तंत्रों के माध्यम से इन्हें संबोधित किया जाता है, तो क्षेत्रीय आकांक्षाएं संघवाद को मजबूत करती हैं, भागीदारी को व्यापक बनाती हैं और भारतीय लोकतंत्र को अधिक समावेशी व उत्तरदायी बनाती हैं।

सामान्य अध्ययन-3 (अर्थव्यवस्था)

प्रश्न 3. भारत में आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में सरकारी बजट के महत्व को समझाइए।

प्रस्तावना (Introduction)

सरकारी बजट एक वार्षिक वित्तीय विवरण होता है जो किसी विशेष वित्तीय वर्ष के लिए अनुमानित प्राप्तियों (receipts) और व्यय (expenditure) को प्रस्तुत करता है। अपने लेखांकन (accounting) कार्य से परे, बजट राजकोषीय नीति (fiscal policy) के एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करता है जिसके माध्यम से सरकार आर्थिक विकास, स्थिरता

और कल्याण को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। भारत जैसे विकासशील देश में, बजट सामाजिक न्याय के साथ विकासात्मक प्राथमिकताओं को संतुलित करने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुख्य भाग (Body)

- **आर्थिक विकास को बढ़ावा देना:** सरकारी बजट के प्राथमिक कार्यों में से एक आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है। सार्वजनिक व्यय (public expenditure) के माध्यम से सरकार बुनियादी ढांचे, सड़कों, रेलवे, बिजली उत्पादन और डिजिटल कनेक्टिविटी में निवेश करती है। ऐसे निवेश उत्पादक संपत्तियों का निर्माण करते हैं, निजी निवेश को प्रोत्साहित करते हैं और रोजगार पैदा करते हैं। बड़े हुए पूंजीगत व्यय (capital expenditure) से अक्सर 'गुणक प्रभाव' (multiplier effects) पैदा होता है, जिससे पूरी अर्थव्यवस्था में आय और मांग को बढ़ावा मिलता है।
- **सामाजिक न्याय की प्राप्ति:** बजट सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में भी कार्य करता है। भारत आय, जाति, लिंग और क्षेत्र के आधार पर काफी सामाजिक-आर्थिक असमानताओं का सामना करता है। प्रगतिशील कराधान (progressive taxation) और कल्याणोन्मुखी खर्च के माध्यम से सरकार इन विसंगतियों को कम करने का प्रयास करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और ग्रामीण रोजगार से संबंधित योजनाएं कमजोर वर्गों को सहायता प्रदान करती हैं और मानव विकास संकेतकों में सुधार करती हैं।
- **संसाधनों का आवंटन:** बजटीय नीति संसाधनों के आवंटन को भी प्रभावित करती है। सरकार सब्सिडी, कर प्रोत्साहनों और लक्षित व्यय के माध्यम से कृषि, नवीकरणीय ऊर्जा और एमएसएमई (MSMEs) जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को प्रोत्साहित कर सकती है। आर्थिक मंदी के दौरान, उच्च खर्च के माध्यम से विस्तारवादी राजकोषीय नीति (expansionary fiscal policy) आर्थिक सुधार और रोजगार सृजन का समर्थन कर सकती है।
- **राजकोषीय अनुशासन की अनिवार्यता:** इसके साथ ही, राजकोषीय अनुशासन (fiscal discipline) बनाए रखना भी आवश्यक है। अत्यधिक राजकोषीय घाटा मुद्रास्फीति (महंगाई) का दबाव पैदा कर सकता है और सार्वजनिक ऋण को बढ़ा सकता है। इसलिए, सरकारों को विकासात्मक व्यय और वित्तीय विवेक के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए। 'राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन' (FRBM) ढांचे जैसी संस्थाओं का उद्देश्य संधारणीय (sustainable) सार्वजनिक वित्त सुनिश्चित करना है।
- **आधुनिक दृष्टिकोण:** हाल के वर्षों में, भारतीय बजटों ने बुनियादी ढांचे के विस्तार, डिजिटल गवर्नेंस, वित्तीय समावेशन और हरित विकास पर तेजी से ध्यान केंद्रित किया है। राजकोषीय संधीय तंत्र के माध्यम से राज्यों को धन का हस्तांतरण संतुलित क्षेत्रीय विकास और सहकारी संघवाद को और अधिक समर्थन देता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सरकारी बजट एक आय-व्यय विवरण से कहीं अधिक है। यह आर्थिक गतिविधियों को निर्देशित करने, असमानताओं को कम करने और कल्याणोन्मुखी विकास सुनिश्चित करने का एक रणनीतिक साधन है। एक अच्छी तरह से तैयार किया गया बजट जो समता (equity) के साथ विकास को संतुलित करता है, भारत में समावेशी और सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

सामान्य अध्ययन-4 (एथिक्स, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि)

प्रश्न 4. "सुशासन के लिए सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा (Integrity) आवश्यक है।" उपयुक्त उदाहरणों सहित चर्चा कीजिए।

प्रस्तावना (Introduction)

सत्यनिष्ठा (Integrity) लोक प्रशासन और शासन के सबसे मौलिक मूल्यों में से एक है। इसका तात्पर्य नैतिक सिद्धांतों के पालन, ईमानदारी, नैतिक आचरण और मूल्यों तथा कार्यों के बीच निरंतरता से है। सार्वजनिक जीवन में, सत्यनिष्ठा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि लोक अधिकारी शक्ति का प्रयोग करते हैं, सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन करते हैं और नीतिगत परिणामों को प्रभावित करते हैं। सुशासन (Good governance), जिसकी विशेषता पारदर्शिता, जवाबदेही, दक्षता और जवाबदेही है, सार्वजनिक संस्थानों और अधिकारियों के बीच सत्यनिष्ठा के बिना कायम नहीं रह सकता।

मुख्य भाग (Body)

- सार्वजनिक विश्वास को मजबूत करना:** सत्यनिष्ठा इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह संस्थानों में जनता के विश्वास को मजबूत करती है। नागरिक उम्मीद करते हैं कि लोक अधिकारी बिना किसी पक्षपात या भ्रष्टाचार के निष्पक्ष और तटस्थ रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे। जब रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद या सत्ता के दुरुपयोग के माध्यम से सत्यनिष्ठा से समझौता किया जाता है, तो शासन में विश्वास कम हो जाता है और लोकतांत्रिक वैधता को नुकसान पहुंचता है। इसलिए, सत्यनिष्ठा लोक प्रशासन की नैतिक नींव के रूप में कार्य करती है।
- पारदर्शिता और जवाबदेही में योगदान:** सत्यनिष्ठा सीधे तौर पर पारदर्शिता और जवाबदेही में योगदान करती है। सत्यनिष्ठा से युक्त लोक अधिकारी यह सुनिश्चित करते हैं कि निर्णय व्यक्तिगत लाभ के बजाय नियमों और जनहित के अनुसार लिए जाएं। पारदर्शी खरीद प्रक्रियाएं, निष्पक्ष भर्ती और कल्याणकारी योजनाओं का ईमानदारी से कार्यान्वयन तभी संभव होता है जब अधिकारी नैतिक मानकों को बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए, कल्याणकारी वितरण में लीकेज (रिसाव) तब कम हो जाती है जब प्रशासक ईमानदारी से कार्यान्वयन की निगरानी करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि लाभ लक्षित लाभार्थियों तक पहुंचे।
- प्रशासनिक दक्षता पर प्रभाव:** शासन में सत्यनिष्ठा के महत्व को प्रदर्शित करने वाले अनेक उदाहरण मौजूद हैं। ईमानदार लोक सेवक जो राजनीतिक दबाव का विरोध करते हैं और संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखते हैं, वे अक्सर प्रशासनिक दक्षता और सार्वजनिक सेवा वितरण में सुधार करते हैं। सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों, आपदा राहत कार्यों और सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों का सफल कार्यान्वयन अक्सर अधिकारियों के समर्पण और नैतिक प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने पर निर्भर करता है।
- सत्यनिष्ठा की कमी के दुष्परिणाम:** इसके विपरीत, सत्यनिष्ठा की कमी से भ्रष्टाचार और शासन की विफलता होती है। सार्वजनिक धन के दुरुपयोग, अनियमित अनुबंधों या पक्षपात से जुड़े घोटाले न केवल आर्थिक नुकसान पहुंचाते हैं बल्कि संस्थागत विश्वसनीयता को भी कमजोर करते हैं। भ्रष्टाचार संसाधनों को विकास परियोजनाओं से भटकाता है और समाज के कमजोर वर्गों को असमान रूप से नुकसान पहुंचाता है। इस प्रकार, सत्यनिष्ठा केवल एक नैतिक आदर्श नहीं बल्कि प्रभावी शासन के लिए एक व्यावहारिक आवश्यकता है।
- अन्य मूल्यों से जुड़ाव:** सत्यनिष्ठा साहस, सहानुभूति, वस्तुनिष्ठता (objectivity) और जवाबदेही जैसे मूल्यों से भी निकटता से जुड़ी हुई है। लोक सेवकों को राजनीतिक तत्वों, निहित स्वार्थों या नौकरशाही पदानुक्रमों से दबाव का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे दबावों के बावजूद नैतिक मानकों को बनाए रखने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है। व्हिसलब्लोअर (सत्य उजागर करने वाले) और नैतिक प्रशासक अक्सर जोखिमों का सामना करते हैं लेकिन जनहित की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- संस्थागत तंत्र:** सूचना का अधिकार अधिनियम, सतर्कता आयोग, भ्रष्टाचार निरोधी एजेंसियां, सामाजिक अंकेक्षण (social audits) और आचार संहिता जैसे उपकरण जवाबदेही को मजबूत करते हैं। हालांकि, संस्थाएं

अकेले नैतिक व्यवहार की गारंटी नहीं दे सकतीं जब तक कि व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपने भीतर आत्मसात (internalize) न कर लें।

निष्कर्ष (Conclusion)

सुशासन के लिए केवल कुशल संस्थाओं और नीतियों से अधिक की आवश्यकता होती है; इसके लिए नैतिक नेतृत्व और सैद्धांतिक लोक सेवकों की आवश्यकता होती है। सत्यनिष्ठा यह सुनिश्चित करती है कि अधिकार का प्रयोग जिम्मेदारी से किया जाए, संसाधनों का उपयोग ईमानदारी से हो और नागरिकों को निष्पक्ष उपचार मिले। इसलिए, लोकतंत्र, जनता के विश्वास और प्रभावी शासन को बनाए रखने के लिए सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा अपरिहार्य बनी हुई है।

समसामयिकी (Current Affairs)

प्रश्न 5. भारत के आर्थिक परिदृश्य को बदलने में एआई (AI) संचालित वित्तीय समावेशन की भूमिका का विश्लेषण कीजिए। इससे जुड़े अवसरों और चिंताओं की चर्चा कीजिए।

प्रस्तावना (Introduction)

वित्तीय समावेशन का तात्पर्य समाज के सभी वर्गों के लिए बैंकिंग, क्रेडिट (ऋण), बीमा और डिजिटल भुगतान जैसी वित्तीय सेवाओं तक सस्ती और समयबद्ध पहुंच सुनिश्चित करना है। भारत में, जन धन योजना और डिजिटल भुगतान प्रणालियों जैसी योजनाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, कई व्यक्तियों और छोटे उद्यमों को औपचारिक वित्त तक पहुंचने में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक ऐसे परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में उभर रहा है जो इन कमियों को पाटने और समावेशी आर्थिक विकास को गति देने में सक्षम है।

मुख्य भाग (Body)

- एआई-संचालित वित्तीय समावेशन के अवसर:** पारंपरिक बैंकिंग प्रणालियाँ अक्सर औपचारिक क्रेडिट इतिहास (CIBIL स्कोर आदि) और संपार्श्विक (collateral/गारंटी) पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं, जिससे अनौपचारिक श्रमिक, छोटे किसान और सूक्ष्म उद्यम प्रक्रिया से बाहर हो जाते हैं। एआई क्रेडिट योग्यता का आकलन करने के लिए लेनदेन के इतिहास, मोबाइल के उपयोग और डिजिटल भुगतान व्यवहार जैसे वैकल्पिक डेटासेट का विश्लेषण करके इस चुनौती का समाधान करता है। यह बैंकों और फिनटेक फर्मों को पहले से वंचित आबादी को ऋण और वित्तीय उत्पाद प्रदान करने में सक्षम बनाता है।
- डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे (DPI) का लाभ:** भारत का डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा एआई एकीकरण के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। आधार-आधारित पहचान, जन धन खातों और यूपीआई (UPI) सक्षम लेनदेन के संयोजन ने एक बड़ा डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र तैयार किया है। एआई सिस्टम व्यक्तिगत वित्तीय उत्पादों को डिजाइन करने, ग्राहक सहायता में सुधार करने और जोखिम प्रबंधन को बढ़ाने के लिए इस डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं। एआई-संचालित चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट स्थानीय भाषाओं में वित्तीय सेवाएं सक्षम करते हैं, जिससे ग्रामीण आबादी के लिए पहुंच में सुधार होता है।
- धोखाधड़ी का पता लगाना और साइबर सुरक्षा:** एआई धोखाधड़ी का पता लगाने और साइबर सुरक्षा को भी मजबूत करता है। मशीन-लर्निंग एल्गोरिदम वास्तविक समय में संदिग्ध लेनदेन का पता लगा सकते हैं, जिससे उपयोगकर्ता सुरक्षित रहते हैं और वित्तीय धोखाधड़ी कम होती है। ऐसे सिस्टम डिजिटल वित्तीय प्लेटफॉर्मों में विश्वास बढ़ाते हैं और औपचारिक वित्तीय प्रणालियों में व्यापक भागीदारी को बढ़ावा देते हैं।

- **एमएसएमई और महिला उद्यमियों को लाभ:** एआई-संचालित वित्तीय समावेशन से विशेष रूप से एमएसएमई (MSMEs), महिला उद्यमियों और ग्रामीण परिवारों को लाभ होता है। छोटे व्यवसायों को अक्सर अपर्याप्त दस्तावेजों के कारण संस्थागत ऋण प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। एआई-आधारित क्रेडिट स्कोरिंग इन बाधाओं को कम करने में मदद करती है और उद्यमिता, रोजगार व आर्थिक उत्पादकता को बढ़ावा देती है।
- **संबद्ध चिंताएं और चुनौतियां:** हालांकि, इन अवसरों के साथ गंभीर चिंताएं भी जुड़ी हुई हैं। डेटा गोपनीयता (data privacy) और सहमति (consent) प्रमुख मुद्दे बने हुए हैं। व्यक्तिगत वित्तीय जानकारी का बड़े पैमाने पर संग्रह और प्रसंस्करण दुरुपयोग और निगरानी (surveillance) के जोखिम को बढ़ाता है। एल्गोरिथम पूर्वाग्रह (Algorithmic bias) एक और चुनौती पेश करता है, क्योंकि त्रुटिपूर्ण डेटासेट भेदभावपूर्ण ऋण निर्णयों को जन्म दे सकते हैं। डिजिटल निरक्षरता और अपर्याप्त इंटरनेट कनेक्टिविटी कमजोर समूहों को और अलग-थलग कर सकती है, जिससे डिजिटल असमानता का एक नया रूप पैदा हो सकता है।
- **नियामक निरीक्षण की आवश्यकता:** इसलिए नियामक निरीक्षण (Regulatory oversight) अत्यंत आवश्यक है। जिम्मेदार कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए नैतिक एआई ढांचे (Ethical AI frameworks), मजबूत डेटा संरक्षण कानूनों और डिजिटल साक्षरता पहलों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

एआई-संचालित वित्तीय समावेशन में पहुंच का विस्तार करके, लेनदेन लागत को कम करके और वंचित समुदायों को सशक्त बनाकर भारत के आर्थिक परिदृश्य को बदलने की अपार क्षमता है। इसके बावजूद, प्रौद्योगिकी को समावेशी, पारदर्शी और जवाबदेह बने रहना चाहिए। नवाचार (innovation) को कड़े नियमों के साथ जोड़ने वाला एक संतुलित दृष्टिकोण यह सुनिश्चित कर सकता है कि एआई न्यायसंगत और सतत वित्तीय विकास का एक सशक्त माध्यम बने।